



Atharva Veda Kand 4

### अथर्ववेद 4.11.1

अनड्वान्दाधार पृथिवीमुत द्यामनड्वान्दाधारोर्वन्तरिक्षम् ।  
अनड्वान्दाधार प्रदिशः षडुर्वीरनड्वान्विश्वं भुवनमा विवेश ॥१॥

(अनड्वान्) बैल, ब्रह्माण्ड नामक गाड़ी को खींचने वाली शक्ति, समूचे ब्रह्माण्ड का भार वहन करने वाला, परमात्मा (दाधार) धारण करता है, पोषण करता है (पृथिवीम्) भूमि को (उत) और (द्याम्) स्वर्गलोक को (अनड्वान्) बैल, ब्रह्माण्ड नामक गाड़ी को खींचने वाली शक्ति, समूचे ब्रह्माण्ड का भार वहन करने वाला, परमात्मा (दाधार) धारण करता है, पोषण करता है (उरू) विशाल, व्यापक (अन्तरिक्षम्) सूर्य और धरती के बीच आकाश का स्थान (अनड्वान्) बैल, ब्रह्माण्ड नामक गाड़ी को खींचने वाली शक्ति, समूचे ब्रह्माण्ड का भार वहन करने वाला, परमात्मा (दाधार) धारण करता है, पोषण करता है (प्रदिशः) मुख्य दिशाएँ (षट्) छः (उर्वीः) विशाल, व्यापक (अनड्वान्) बैल, ब्रह्माण्ड नामक गाड़ी को खींचने वाली शक्ति, समूचे ब्रह्माण्ड का भार वहन करने वाला, परमात्मा (विश्वम्) सभी (भुवनम्) अस्तित्वमय संसार (आ विवेश) प्रवेश करता है, स्थापित है।

नोट:- अथर्ववेद 4.11.1 तथा अथर्ववेद 10.7.35 मूलतः समान हैं। अथर्ववेद 4.11.1 में देवता है 'अनड्वान्' अर्थात् बैल, ब्रह्माण्ड नामक गाड़ी को खींचने वाली शक्ति, समूचे ब्रह्माण्ड का भार वहन करने वाला, परमात्मा। अथर्ववेद 10.7.35 में देवता है 'स्कम्भ' अर्थात् समर्थन स्तम्भ, सबका आधार, ब्रह्माण्ड को समर्थन देने वाला, परमात्मा। इस प्रकार दोनों मन्त्र अलग-अलग शब्दों में परमात्मा को इस सारी सृष्टि का अकेला पोषक, धारण करने वाला और समर्थन देने वाला सिद्ध करते हैं।

व्याख्या:-

इस सृष्टि को कौन धारण करता है और पोषण करता है?

यह सृष्टि किसमें स्थापित है?

अनड्वान्, बैल, ब्रह्माण्ड नामक गाड़ी को खींचने वाली शक्ति, समूचे ब्रह्माण्ड का भार वहन करने वाला, परमात्मा, धरती और स्वर्ग दोनों को धारण और पोषण करते हैं। अनड्वान्, बैल, ब्रह्माण्ड नामक गाड़ी को खींचने वाली शक्ति, समूचे ब्रह्माण्ड का भार वहन करने वाला, परमात्मा, धरती और सूर्य के बीच के विशाल और व्यापक आकाशीय स्थान को धारण और पोषण करते हैं। अनड्वान्, बैल, ब्रह्माण्ड नामक गाड़ी को खींचने वाली शक्ति, समूचे ब्रह्माण्ड का भार वहन करने वाला, परमात्मा, विशाल और व्यापक छः मुख्य दिशाओं – पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ऊपर और नीचे, सबको धारण और पोषण करते हैं। उस अनड्वान्, बैल, ब्रह्माण्ड नामक गाड़ी को खींचने वाली शक्ति, समूचे ब्रह्माण्ड का भार वहन करने वाला, परमात्मा में समूचा अस्तित्वमय संसार प्रवेश करता है और स्थापित होता है।

जीवन में सार्थकता:-

परमात्मा के 'योगानुशासनम्' की अनुभूति किस प्रकार करें?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



अपने निर्माताओं और वृद्धजनों के अनुशासन की अनुभूति किस प्रकार करें?

परमात्मा ने इस सृष्टि का निर्माण किया। वह स्वाभाविक कारण से इस संसार को धारण और इसका पोषण करता है, क्योंकि यह सारा ब्रह्माण्ड उसी की अभिव्यक्ति है और उसी में स्थापित है। यह सब जीवों के समुचित पोषण के लिए है।

अतः, आध्यात्मिक रूप से हमें सदैव सुरक्षित महसूस करना चाहिए, क्योंकि हम उसी में स्थापित हैं। हम उसकी वास्तविकता से उसकी शक्तियों और उसके अधिकार क्षेत्र से बाहर नहीं रह सकते। यह विश्वास और एहसास हमें उसकी संगति और अनुशासन अर्थात् 'योगानुशासनम्', उसकी एकता के अनुशासन या उसके अनुशासन के साथ एकता के साथ जोड़े रखे।

हमें यही अनुपातिक सिद्धान्त अपने वृद्धजनों और निर्माताओं के साथ महसूस करना चाहिए और अनुसरण, चाहे वे हमारे माता-पिता हों, अध्यापक हों, वृद्धजन हों या किसी भी क्षेत्र में हमारा नेतृत्व करने वाले हों। वे सभी हमें धारण करते हैं और हमारा पोषण करते हैं। हमें सदैव उनके साथ एकता महसूस करनी चाहिए और उनके अनुशासन में स्थापित रहना चाहिए।

**This file is incomplete/under construction**

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171